بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-23.06.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बदर की लड़ाई के लिए तय्यारी के वृत्तांत व घटनाएँ तथा सहाबा किराम रज़ी. का अपने आक़ा व मुताअ सल्लल्लाह् अलैहि वसल्लम से अत्यंत स्नेहपूर्ण आज्ञा-पालन का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिरिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 23 जून 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- जैसा कि पिछले ख़ुत्बः में बयान हुआ था कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के भेजे हुए सूचना देने वालों ने जब यह सूचना दी कि क़ुरैश की सेना व्यापारिक दल के बचाव हेतु आगे बढ़ी चली आ रही है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सहाबा किराम को स्थिति से अवगत किया तथा सुझाव देने को कहा।

हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा हज़रत उमर रज़ी. के बाद हज़रत मिक़दाद बिन उमरू रज़ी. ने कहा कि हम ऐसा जवाब न देंगे जिस तरह बनी इसराईल ने मूसा अलै. को दिया था कि فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ अर्थात- जा तू और तेरा रब दोनों लड़ो, हम तो यहीं बैठे रहेंगे, बल्कि हम आप स. के साथ हैं जो भी आप स. निर्णय लें, और आप स. के साथ मिल कर, आप स. की संगत में दुश्मन के साथ युद्ध करेंगे। उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ नियुक्त फ़रमाया है यदि आप हमें बर्कुल ग़माद नामक स्थान तक भी ले जाएँ तो हम आपके साथ चलेंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सुनकर उन्हें भलाई के शब्दों के साथ सम्बोधित किया और उनके लिए दुआ फ़रमाई।

एक लेखक ने यह लिखा है कि बर्कुल ग़माद मक्का के दक्षिण में लगभग चार सौ तीस किलोमीटर की दूरी पर सामान्य मार्ग से हट कर दूर सुदूर स्थान था जो दूर की यात्रा एवं कठिनाई के लिए मुहावरे के तौर पर बोला जाता था। अभिप्रायः यह था कि जितनी चाहे दूर तशरीफ़ ले जाएँ, हम आपके साथ होंगे।

हज़रत अबू बकर रज़ी, हज़रत उमर रज़ी. और हज़रत मिक़दाद रज़ी. तीनों महाजिरों में से थे इस लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इच्छा थी कि अन्सार का सुझाव लें।

हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी. ने कहा कि हम आप स. पर ईमान ले आए हैं और आप स. के दीन की गवाही दी है और हमने आप स. का आदेश सुनने तथा उसके अनुसार आज्ञा पालन करने का संकल्प किया है इस लिए आप स. हमें जहाँ ले जाएँ, हम चलने के लिए तय्यार हैं।

अतः अल्लाह की बरकत पर आप स. हमारे साथ रवाना हो जाएँ। अतएव हज़रत सअद रज़ी. की यह बात सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बड़े प्रसन्न हुए और फ़रमाया कि-

अल्लाह तआला ने मुझे दो दलों (शाम देश की ओर स आने वाला व्यापारिक दल या मक्का के काफ़िरों की सेना) में से एक पर ग़ल्बः देने का वादा किया है। मैं वह स्थान देख रहा हूँ जहाँ शत्रु के आदमी वध होकर गिरेंगे।

सहाबियों ने पूछा या रसूलुल्लाह! यदि आपको पहले से क़ुरैश की सेना के विषय में जानकारी थी तो आपने हमसे मदीने में ही युद्ध की संभावना का वर्णन क्यूँ न फ़रमा दिया कि हम कुछ तय्यारी तो करके निकलते। किन्तु बावजद् इस सूचना एवं इस सुझाव के और बावजूद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से उस ख़ुदाई शुभ सूचना के कि इन दो दलों में से किसी एक पर मुसलमानों को अवश्य विजय प्राप्त होगी, अभी तक मुसलमानों को निश्चित रूप से यह पता नहीं था कि उनका मुक़ाबला किस दल के साथ होगा और वे इन दोनों दलों में से किसी एक के साथ मुठभेड़ हो जाने की सम्भावना समझते थे तथा स्वभाविक रूप से दुर्बल गिरोह अर्थात व्यापारिक दल के मुक़ाबले के लिए अधिक उत्सुक थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. इस बारे में फ़रमाते हैं कि बदर के अवसर पर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्सार का मशवरा चाहते थे। अन्सार के मस्तिष्क में यह था कि लड़ने वाले मक्का के लोग हैं और वे कोई मशवरा देंगे तो महाजिर यह समझेंगे कि यह हमारे भाईयों तथा रिश्तेदारों से लड़ने का कह रहे हैं परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बार बार फ़रमाने के बाद अन्ततः अन्सार ने अपने असमंजस का वर्णन करने के बाद मशवरा दिया कि हम हर हाल में आप स. के साथ हैं। अन्सार के मशवरे के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहाँ से रवाना हुए तथा बदर के निकट ठहर गए। कुछ समय पश्चात आप स. और हज़रत अबू बकर रज़ी. निकले और एक अरबी बूढ़े के पास जाकर रुक गए और क़ैरश के विषय में पूछा। बूढ़े ने कहा, मुझे पता चला है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप स. के सहाबी अमुक दिन रवाना हो चुके हैं और यदि यह बात ठीक है तो इस समय वे इस स्थान पर होंगे। मुझे यह भी ज्ञात हुआ है कि क़ुरैश अमुक दिन रवाना हुए हैं और यदि यह बात ठीक है तो वे अमुक स्थान पर होंगे। बूढ़े के पूछने पर कि आप कौन लोग हो? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अति विवेक पूर्ण उत्तर दिया कि हम पानी से हैं। यह अधिक सम्भावना है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बदर के स्रोत का हवाला दिया हो। अल्लाह ही उचित जानता है।

वापस आने के बाद शाम के समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ी, हज़रत जुबैर बिन अवाम रज़ी. और हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ो. को कुछ अन्य सहाबियों के साथ बदर के

स्रोत की ओर रवाना फ़रमाया ताकि दुश्मन की और अधिक जानकारी ला सकें। वे दो लोगों को पकड़ लाए जिन्होंने बताया कि क़ुरैश ने हमें पानी लाने भेजा था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूछने पर उन्होंने बताया कि बहुत से क़ुरैश इस पहाड़ी के पीछे मौजूद हैं तथा वे किसी दिन नौ और किसी दिन दस ऊँट काटते हैं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अनुमान लगाया कि वे लोग नौ सौ और एक हज़ार के लगभग हैं। फिर उन्होंने क़ुरैश के कई सरदारों के नाम बताए जो उस सेना में शामिल थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मक्क वाला ने तुम्हारे सामने अपने जिगर के टुकड़े लाकर डाल दिए हैं। ये अत्यंत बुद्धिमत एवं विवेक पूर्ण शब्द थे जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुंह से स्वयं निकले जिनके कारण सहाबियों के दिल मज़बूत हो गए कि ख़ुदा ने उनको निश्चित ही विजय प्रदान करनी है।

उस अवसर पर ख़बाब बिन मुंज़िर रज़ी. ने कहा कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या आप स. ने अल्लाह के आदेशानुसार इस स्थान पर पड़ाव डाला है अथवा केवल आप स. का सुझाव या रणनीति है?

आप स. ने फ़रमाया कि रणनीति है, तब उन्होंने निवेदन पूर्वक कहा कि यह स्थान उचित नहीं बल्कि दुश्मन के पानी से निकटतम स्थान पर पड़ाव डाला जाए और सारे कुएँ बन्द कर दिए जाएँ और अपने लिए एक कुंड में पानी भर दिया जाए और हम दुश्मन स मुक़ाबला करते हैं तो हमारे लिए पानी उपलब्ध होगा तथा दुश्मन पानी से वंचित रहेगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस सुझाव को पसन्द फ़रमाया तथा दुश्मन के निकटतम कुएँ पर पड़ाव डाल कर शेष कुएँ बेकार कर दिए तथा एक कुंड बनाकर उसे पानी से भर दिया। औस क़बीले के सरदार सअद बिन मुआज़ रज़ी. के सुझाव पर मैदान के एक भाग में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए एक छाँवदार विश्राम कक्ष तय्यार किया तथा आप स. की सवारी भी वहाँ बाँध दी। उन्होंने निवेदन किया कि आप स. यहाँ विश्राम करें और हम लड़ेंगे, यदि हम पराजित हुए तो आप स. उस सवारी पर मदीना पहुंच जाएँ वहाँ हमारे भाई आप स. की रक्षा करेंगे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. इस बारे में फ़रमाते हैं कि जब बदर के मैदान में पहुंचे तो सहाबा रज़ी. ने विचार विमर्श के बाद आप स. को एक ऊँचे स्थान पर सायबान में बिठा दिया और सबसे तेज़ दौड़ने वाली ऊँटनी वहाँ बाँध दी और कहा-

हम थोड़े हैं और दुश्मन अत्यधिक संख्या में हैं, हमें अपनी मृत्यु की कोई चिंता नहों, हमें आप स. की चिंता है। हम यदि मर गए तो इस्लाम की कोई हानि नहीं होगी परन्तु आप स. के साथ इस्लाम का जीवन जुड़ा है। अतः आवश्यक है कि हम आप स. की सुरक्षा का प्रबन्ध कर दें। यदि ख़ुदा न करे हम एक एक करके शहीद हो जाएं तो आप स. इस ऊँटनी पर सवार होकर मदीना पहुंच जाएँ, वहाँ हमारे भाई आपकी रक्षा करेंगे।

अतएव आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने न उनकी बात मानी, और न मान सकते थे परन्तु यह सहाबा रज़ी. की एक भावना थी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ी. ने एक बार फ़रमाया कि सहाबियों में सर्वाधिक दलेर एवं बहादुर हज़रत अबू बकर रज़ी. थे।

बदर की लड़ाई में जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए एक अलग चबूतरा बनाया गया तो हज़रत अबू बकर रज़ी. तुरन्त नंगी तलवार लेकर खड़े हो गए और इस आशंका के अवसर पर आप स. की सुरक्षा का कर्त्तव्य निभाया।

सुबह के समय जब क़ुरैश आगे बढ़े तो आप स. ने ख़ुदा के समक्ष दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह ! तू ने जो सहायता देने का वादा फ़रमाया है उसे पूरा कर तथा आज ही इनका विनाश कर दे।

जब क़ुरैश बदर के मैदान में उतरे तो उनमें से एक दल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पानी वाले कुंड पर आकर पानी पीने लगा। उनमें हकीम बिन हिज़ाम भी शामिल थे। उस दिन उस हौज़ से जिसने भी पानी पिया, हकीम बिन हिज़ाम के अतिरिक्त जो बाद में मुसलमान हो गए थे, उन सबका वध हो गया। क़ुरैश के आने से पहले आप स. ने सहाबियों को पंक्तिबद्ध किया। आप स. तीर से संकेत दे रहे थे। मुस्अब बिन उमैर रज़ी. को झंडा प्रदान किया। सेना की पंक्तियों को सीधा करते समय जब आप स. का गुज़र सवाद बिन ग़ज़िया रज़ी. के पास से हुआ तो वे पंक्ति से बाहर निकले हुए थे। आप स. ने उनकी पीठ पर तीर लगाकर फ़रमाया कि सीधे हो जाओ। सवाद रज़ी. ने कहा कि आप स. ने मुझे कष्ट दिया है, मुझे बदला दें। आप स. ने पेट से कपड़ा उठा कर फ़रमाया कि बदला ले लो।

हज़रत सवाद रज़ी. आप स. के सीने से लिपट गए तथा आप स. के शरीर को चूमने लगे और कहा कि मैंने चाहा कि आप स. के साथ मेरे अन्तिम क्षण इस प्रकार व्यतीत हों कि मेरा शरीर आप स. के पवित्र शरीर के साथ लिपटा हो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिए भलाई की दुआ फ़रमाई। ये थे इश्क़ व मुहब्बत के दृश्य, शेष इन्शाअल्लाह आगे बयान करूँगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में मुकर्रम क़ारी मुहम्मद आशिक़ साहब भूतपूर्व अध्यापक जामिअः अहमदियः रबवा, तथा प्रिन्सिपल एवं निगरान मदर्सातुल हिफ़्ज़ रबवा और सऊदी अरब की एक जेल में बन्दी होने के समय वफ़ात पाने वाले मुकर्रम नूरुद्दीन अलहुसैनी साहब ऑफ़ शाम देश की वफ़ात पर दोनों मृतकों की जीवनी तथा जमाअत की सेवा का विस्तार पूर्वक वर्णन फ़रमाया तथा जुम्अः की नमाज़ के बाद ग़ायब जनाज़ा पढ़ाने की घोषणा भी फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131